भगतसिंह का ख्वाब अधूरा

'हवाओं में रहेगी मेरे ख्याल की बिजली, ये मुश्त-ए-खाक़ है फ़ानी, रहे, रहे, ना रहे!'

साथियों,

10 लाख करोड़ रुपये की चोरी तो, अडानी की पकड़ी जा चुकी है. कितनी फ़र्ज़ी कंपनियां, कहाँ कहाँ हैं, कुल कितनी लूट मचाई है, अंदाज़ मुश्किल है. देश की सम्पदा को बेरहमी से लूटने वाला, अडानी अकेला नहीं है. ये ही है, मोदी जी का 'विकास'!! एक छोर पर, ये कॉर्पोरेट लुटेरे, जिनके लूट के राज़ को बचाने-बढ़ाने के लिए, सरकार पूरी निर्लज्जता और नंगई के साथ, उनके साथ खड़ी है. संसद में भी, प्रचंड बहुमत का 'बुलडोज़र' चलाकर, जाँच तक नहीं होने दे रही. दूसरी तरफ़, कंगाली, दरिद्रता, भुखमरी का महासागर. अभूतपूर्व बेरोज़गारी, जो कोरोना विपदा के वक़्त से भी आगे निकल गई है. ऐसे युवाओं की आधिकारिक तादाद, जिन्होंने हताश होकर, नौकरी की तलाश ही छोड़ दी है, 1.24 करोड़ है. हर रोज़, किसी न किसी सरकारी विभाग अथवा कंपनी में कर्मचारियों की छंटनी की ख़बरें छपती हैं. भुखमरी सूचकांक में देश 107 वें नंबर पर सोमालिया के साथ खड़ा है. 85 करोड़ लोग कंगाली के उस स्तर को छू चुके, कि जिंदा रहने लायक़ अनाज भी नहीं ख़रीद पाते. 'लाभार्थी' बनकर हर रोज़ सरकारी लानत झेलने को मज़बूर हैं. बे-इन्तेहा मंहगाई के बोझ तले कुचला देश कराह रहा है. 'आने वाला वक़्त और भी भयानक है', सरकारी-दरबारी अर्थशास्त्री भी ये बोलने लगे हैं.

एकतरफ गिनती में लगातार कम होते जा रहे, लेकिन मुनाफ़े से फूलते जा रहे, मुट्ठीभर कॉर्पोरेट और दूसरी और कंगाली, दरिद्रता, बदहाली से कराहता 99 प्रतिशत समाज. ये ही है, मोदी जी का विश्वगुरु भारत, और यही है उनका अमृत काल. अमीर-ग़रीब की खाई बढ़ने की भयावहता का ये आलम है कि सबसे धनी 1 प्रतिशत के पास, देश की कुल सम्पदा का 40 प्रतिशत है!! सबसे बड़े धन पशुओं की सम्पदा में, हर रोज़ 2.7 बिलियन जुड़ जाते हैं. समाज का सबसे ग़रीब मेहनतक़श 99 प्रतिशत तबका, जितनी मेहनत से, अपने लिए एक रूपया कमाता है; उसकी उसी मेहनत को चुराकर, धन्नासेठ मालिक, 17 लाख रु कमाता है. देश के सबसे अमीर 21 मगरमच्छों की दौलत, 70 करोड़ मेहनतक़शों की कुल आमदनी से ज्यादा है. ये है, पूंजी का नंगा नाच!! पूंजीवाद, आदमखोर बन चुका है. मुनाफ़े की अज़गरी भूख से संचालित ये मानवद्रोही व्यवस्था, क़ब्र में दफ़न होने से पहले, फ़ासीवाद के रूप में तबाही का भयानक मंज़र दिखाने पर उतारू है.

क्या, इन्हीं निर्लज्ज लुटेरों, अडानी-अम्बानियों को लूट की आज़ादी मिले, इसीलिए शहीद हुए थे; कमांडर-इन-चीफ, अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव?

क्या ये देश, इन मुट्ठीभर धनपशुओं का है, जिनकी लूट की दौलत का एक हिस्सा भी पकड़ा जाए तो उसे पूरे देश पर हमला बोलते हैं, या करोड़ों मेहनतक़श किसानों, मज़दूरों और किसी तरह रेहड़ी पटरी पर फुटकर सामान बेच रहे मज़दूर-दुकानदारों का है? क्या इसी पूंजी के राज़ को लाने के लिए, 23-24 साल की उम्र में, देश के इन अमर सपूतों ने फांसी के फंदे चूमे थे? इन सवालों से मुंह चुराना घोर समाज-विरोधी कृत्य है जिसके लिए इतिहास हमें कभी माफ़ नहीं करेगा. दिनोंदिन बिस्फोटक होती जा रही परिस्थिति को, चुप-चाप बैठकर, टुकर-टुकर देखना, सामाजिक अपराध तो है ही, ये हमारे इन अमर क्रांतिकारी शहीदों की शहादत का अपमान है, समाज के साथ ग़द्दारी है.

क्या, इन्हीं निर्लज्ज लुटेरों, अडानी-अम्बानियों को लूट की आज़ादी मिले, इसीलिए शहीद हुए थे; कमांडर-इन-चीफ, अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव?

काकोरी के अमर शहीदों, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाकुल्लाह खां तथा रामप्रसाद बिस्मिल की शहादत, 19 दिसम्बर 1927 के बाद जब आक्रोश की वैसी लहर नहीं उठी, जैसी भगतसिंह उम्मीद कर रहे थे, तो वे गुस्से से भर गए थे. बुरी तरह झल्लाकर, 'किरती' अख़बार में भगतसिंह और भगवती चरण वोहरा ने, संयुक्त रूप से देशवासियों को इस तरह लताड़ा था.

"इस हालत को सुधारने का एक ही साधन है, इस दुर्दशा को बदलने का एक मात्र इलाज है, इस दुर्दशा की एक ही दवा है, और वह है आज़ादी. आज़ादी क़ुर्बानियों के बगैर नहीं मिल सकती. शहीदों की इज्ज़त करने, शहीदों के कारनामे याद करने से, क़ुर्बानी का चाव उमड़ता है. जो कौम शहीदों को शहीद नहीं कह सकती, उसे क्या खाक़ आज़ाद होना है...शहीद वीरो! हम कृतघ्न हैं, हम तुम्हारे किए को नहीं जानते. हम कायर हैं, हम सच-सच नहीं कह सकते. हमें आप माफ़ करो, हमें आप क्षमा दान दो. हमें मौत से भय लगता है, हमारा दिमाग सूली का नाम सुनते ही चक्कर खा जाता है. आप धन्य थे. आपके बड़े जिगर थे कि आपने फांसी को टिच्च समझा. आपने मौत के सामने मजाक किए. पर हम? हमें चमड़ी प्यारी है, हमें तो ज़रा सी तक़लीफ़ ही मौत बनकर दिखने लगती है. आज़ादी! आज़ादी का नाम तो सुनते ही हमें कंपकंपी छूट जाती है. हाँ! गुलामी के साथ हमें प्यार है, गुलामी की ठोकरों से हमें मज़ा आता है. आपकी नस-नस से रग-रग से आज़ादी की पुकार गूंजती थी लेकिन हमारी रग-रग से, हमारी नस-नस से गुलामी की आवाज़ निकलती है. आपका और हमारा क्या मेल? हमें आप क्षमा करो. आप हमारे केवल यह प्रेम के अश्रू ही स्वीकार करो. कहो, धन्य हैं, काकोरी के शहीद..!!" आज, देश के ऐसे विकराल हालात देखकर चुप रहने, तटस्थ-निरीह रहने वाले, क्या ऐसी ही लानत के हक़दार नहीं हैं?

शहीद-ए-आज़म भगतसिंह और भगवती चरण वोहरा अपने भावी कार्यक्रम का मसौदा इस तरह प्रस्तुत किया था - "देश को तैयार करने के भावी कार्यक्रम का शुभारम्भ इस आदर्श वाक्य से शुरू होगा- "क्रांति जनता द्वारा, जनता के हित में."दूसरे शब्दों में 98 प्रतिशत के लिए स्वराज्य. स्वराज्य, जनता द्वारा प्राप्त ही नहीं बल्कि जनता के लिए भी. यह एक बहुत कठिन काम है. यद्यपि हमारे नेताओं ने बहुत से सुझाव दिए हैं लेकिन जनता को जगाने के लिए कोई योजना पेश करके उस पर अमल करने का साहस नहीं किया. विस्तार में जाए बगैर हम ये दावे से कह सकते हैं कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए, रूसी नवयुवकों की भांति हमारे हजारों मेधावी नौजवानों को अपना बहुमूल्य जीवन गावों में बिताना पड़ेगा और लोगों को समझाना पड़ेगा कि भारतीय क्रांति वास्तव में क्या होगी. उन्हें समझाना पड़ेगा कि आने वाली क्रांति का मतलब केवल मालिकों की तबदीली नहीं होगा. उसका अर्थ होगा नई व्यवस्था का जन्म - एक नई राज्य-सत्ता."

शहादत से महज 3 दिन पहले 20 मार्च 1931को, पंजाब के गवर्नर को लिखे पत्र में भगतसिंह अपने क्रांतिकारी विचारों के बारे में, कोई संदेह नहीं रहने देते. "हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है, और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है- चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नही पड़ता. हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न-भिन्न दशाओं में भिन्न- भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी किसान के स्तर पर युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाए कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाए। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आप की इच्छा है कि आप जिस परिस्थिति को चाहे चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी -छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। बहुत सभव है कि यह युद्ध भयंकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नही हो जाता. निकट भविष्य में अन्तिम युद्ध लड़ा जाएगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूँजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। साथियों, पूंजीवादी शोषण की लूट-खसोट अपने चरम को छू चुकी है. शोषक-लुटेरों को खुलकर बिंदास लूट- खसोट करने की ना सिर्फ छूट दी जा रही है, बल्कि ये लुटेरे, प्रधानमंत्री के साथ गलबहियां कर देश-विदेश के उनके हर दौरों पर जाते हैं. सत्ता सूत्र अब सीधे इन्हीं चंद कॉर्पोरेट के हाथों में हैं. बजट में हमने देखा कि मनरेगा, जन-स्वास्थ्य, शिक्षा, किसानों-ग्रामीणों के लिए आबंटन और खाद-सब्सिडी को कम कर दिया गया हैं.

ग़रीबों की जीवनावश्यक वस्तुओं जैसे छाछ, आटा तक पर भयंकर टैक्स लगाए जा रहे हैं, और अकूत दौलत के पहाड़ पर बैठे इन आदमखोर धन-पशुओं के कॉर्पोरेट टैक्स को कम कर दिया गया है. याद कीजिए 2014 और 2019, जब हमें हिंदुत्व और अंधराष्ट्रवाद के नशे में गाफ़िल कर दिया गया था, झूठे जुमलों की बौछार; हर खाते में 15 लाख, हर साल 2 करोड़ रोज़गार, किसानों की आय डबल, जहाँ झुग्गी वहीँ पक्का मकान, जाने क्या-क्या वादा कर ठगा गया था. दुनिया के धन-पशुओं की लिस्ट में, उस वक़्त 609 वें नंबर पर बैठा अडानी, दुनिया का दूसरा सबसे अमीर व्यक्ति कैसे बना? यही था उनका असल मक़सद. सारा उत्पादन और निर्माण करने वाले, ग़रीब मज़दूरों के ख़िलाफ़ तो सरकार ने युद्ध छेड़ा हुआ है. मालिकों को, मज़दूरों का खून चूसने की पूरी आज़ादी मिली हुई है. कोई श्रम क़ानून लागू नहीं. उनके पी एफ तक का पैसा, कारखानेदार पूरी निर्लज्जता से डकार रहे हैं. सारी की सारी मज़दूर बस्तियों-झुग्गी-झोंपड़ियों को तोड़ने की तैयारी हो चुकी है.

वस्तुगत परिस्थितियां क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए मचल रही हैं. श्रम का सम्मान करने वाले, नए उन्नत समाज, समाजवाद को प्रस्थापित करने के लिए, समाज प्रसव वेदना से गुज़र रहा है. मज़दूरों और मेहनतक़श किसानों को अपनी तारीखी ज़िम्मेदारी निभानी है. समाज को फ़ासीवादी जकड़बंदी से मुक्त कराना है. अपनी मुद्दत पूरी कर चुके, पूंजीवाद-साम्राज्यवाद-फ़ासीवाद को गहरा दफ़नाना है.

मजदूर सभा

मज़दूर जब भी जागा है; इतिहास ने करवट बदली है

हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) के कमांडर-इन-चीफ, अमर शहीद क्रांतिकारी चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत की पूर्व संध्या पर मज़दूर सभा; 26 फ़रवरी, रविवार, दोपहर 12 बजे, पब्लिक पार्क, अपीजे स्वर्ण ग्लोबल स्कूल के सामने, सेक्टर 21 डी, फ़रीदाबाद. शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव के शहादत दिवस, 23 मार्च, गुरुवार, सुबह 10.30 बजे, सभी साथी सामुदायिक केंद्र, आज़ाद नगर सेक्टर 24 पर इकट्ठे होंगे. औद्योगिक क्षेत्र से मार्च करते हुए, 12 बजे वीनस पार्क में खुली मज़दूर सभा संपर्क नरेश 9868483444, सत्यवीर 8383841789, हरेन्द्र 8860342355, रजनीश 9718235695 खुशाली 8512816387, सुभाष 9891506321, पारुल 7838428369, विजय 9997540590